

## फिर भी मैं उठूंगी

Translated by: Garima Singh

Research Scholar  
Department of English  
University of Jammu

तुम चाहे लिख दो इतिहास में  
मेरे बारे में कड़वे, विकृत झूठ,  
तुम चाहे रौंद दो कीचड़ में मुझे  
मैं फिर भी बनके धूल, उठूंगी।

क्या मेरा बेबाक पन तुम्हें परेशान करता है?  
क्यों घिरे हुए हो दुख में तुम देख कर मेरी चाल?  
जैसे हों मेरे कक्ष में तेल के कुएं कई हजार।

बिल्कुल चाँद और सूरज की तरह,  
ज्वार के आत्मविश्वास की तरह,  
बढ़ती उम्मीदों के अंकुरों की तरह,  
मैं उठूंगी।

क्या तुम देखना चाहते हो मुझे टूटे हुए?  
सर झुकाए, आंखें नीची किए हुए?  
बेहते आंसुओं की तरह कंधे गिरे हुए,  
कमजोर पड़ते हुए अपनी भावपूर्ण याचनाओं से?

क्या मेरा स्वाभिमान तुम्हें उत्तेजित करता है?  
क्या इतना कठिन है तुम्हारे लिए मुझे देखना हसते जैसे हो मेरे पास सोने की खदानें कई हजार।

बाण चला सकते हो अपने कठोर शत्रुओं का मुझ पर,  
चीर सकते हो मुझे अपनी नजरों से,  
मार सकते हो मुझे अपनी नफ़रत से,  
पर फिर भी हवा की तरह,  
मैं उठूंगी।

क्या मेरा अल्हड़पन तुम्हें हैरान करता है?  
क्या चौंक जाते हो तुम कि मैं थरथराती हूँ  
जैसे हीरे गड़े हो मेरे अंग अंग में।

उसी शर्मनाक इतिहास से मैं उठूंगी  
उसी दर्दनाक अतीत से मैं उठूंगी  
मैं वह काला महासागर हूँ जो अंतकाल तक बस आगे फैल रहा है,  
पनप रही हूँ मैं उसी उठते गिरते ज्वार में।

डर और अंधकार को पीछे पछाड़कर  
मैं उठूंगी  
एक ऐसे उजाले में जो स्वयं प्रकाशित है  
मैं उठूंगी  
अपने पूर्वजों की धरोहर के साथ,  
उन गुलामों का एक सपना और उम्मीद बन के।

मैं उठूंगी  
मैं उठूंगी  
मैं उठूंगी।

## Original Text

By Maya Angelou

You may write me down in history  
With your bitter, twisted lies,  
You may trod me in the very dirt  
But still, like dust, I'll rise.

Does my sassiness upset you?  
Why are you beset with gloom?  
'Cause I walk like I've got oil wells  
Pumping in my living room.

Just like moons and like suns,  
With the certainty of tides,  
Just like hopes springing high,  
Still I'll rise.

Did you want to see me broken?  
Bowed head and lowered eyes?  
Shoulders falling down like teardrops,  
Weakened by my soulful cries?

Does my haughtiness offend you?  
Don't you take it awful hard  
'Cause I laugh like I've got gold mines  
Diggin' in my own backyard.

You may shoot me with your words,  
You may cut me with your eyes,  
You may kill me with your hatefulness,  
But still, like air, I'll rise.

Does my sexiness upset you?  
Does it come as a surprise  
That I dance like I've got diamonds  
At the meeting of my thighs?

Out of the huts of history's shame  
I rise  
Up from a past that's rooted in pain

I rise  
I'm a black ocean, leaping and wide,  
Welling and swelling I bear in the tide.

Leaving behind nights of terror and fear  
I rise  
Into a daybreak that's wondrously clear  
I rise  
Bringing the gifts that my ancestors gave,  
I am the dream and the hope of the slave.  
I rise  
I rise  
I rise.